

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/



ACC: NO: -561 M 1048

Title: - AMZY GIEHOJ:

EYOUH HOORS

TOT: - A-D: 1537



Checked 2012

शिक्षिण्याचित्रयान्त्राः शहिष्ठक्ष्यम्। विश्ववेदेवादेवतास्तृतीयमहवहीत सप्तद्वास्त्रोमो वस्तः तामजगती छैदो यथादेवत्मन ने यथास्त्रामयथासा मयथा छ दस्राभ्नोतियप्वविवयद्वसमानो दस्तृतं स्त्रीयस्याक्ताम् वयद्वस्य वद्यदेवत् स्त्रीयस्य वद्यदेवत् स्त्रीयस्य स्वयदेवत् स्त्रीयस्य स्त्रियदेवत् स्त्रीयस्य स्त्रीत् विवयदेवत् स्त्रीयस्य क्रियदेवत् स्त्रीयस्य क्रियस्य क्रियस्य

मश्च तेययकासयनेयएवंवैद्धेनस्माह श्वःपश्चनां अविष्ट्रस्त स्माद्धः प्रयंद्धकाहि नस्तापपाप्तानं हेने प्रवंवेदनस्मादे तर्भाव रहे स्व वेदिन स्मादे वेदिन स्व वेद

वर मलो क्या व वेद ते हम वि र हो जी मह बाजो देव स वि त वि ति वेश्व देव स्था ति पद ते योगा धातरे हाने हानो येहाने हा ती ये स्पाही के पीन हे वस्पास क्षित वा यंगहर तिमा वित्र मता वे महदत्ते स्त्र तो समहस्र तो यह ति स्त्र तो सम्प्रहास प्रदान्धा या साधाशासी ह ते इतिया ग्रहाधिया यह ता श्रिया हरता स्था क्याहभी विवास हज इस मिन्द्र तीयह विन्द्रतीय स्वाद्ध स्वास

द्यार्

हें बा साथ

ज्यो जाता ज्य मध्य स्तियं रथि हिय महाति विस्ति स्ययरावनाय दिशिष्टने आया मितिवेश्च देव मितीबे प्रावतित रूटता यमह रूट लायहान् स्याहास्य त्रायामहोत्न व्यायास्य साताविश्वयाद्यामाप्रम् माणा कृत्यप्र मंन्डोक मंडाय इच विश्वेषा त्रियं या मगळ ति अयति पर मंत्री केयए वृत्ते वे वेशान रायाधिषाणि स्ता छ घर सा जि मार न स्य प्रतिपद ना व शिवाणित रहितीय महस्रितीयहानित्यतीय स्थाही स्थिधारा वरा महती ध स क्षाजदित मागतंब कि सिंग्सिय मिता वेब कि तस्ति। युमह म्हती यह निर्दे जानियं वत्रदेश द्याध्य स्वाभित्यं क्रमध्य सभ्य मध्य सम्बद्धा

तिअहरसंस्वेष्ठनरस्वहावागकेगारक्षेवागकेन वागव्य द्वा अस्ति विभाव वि

यताः त्रात र तुवा के न्यं त्यं यिष्ठ यता वेष जा च्यान्य ति स् यता प्रवाद न्यं यया विष्ठ यता विष्ठ या विष्ठ या

तनीदेवेन ननप्रस्वतं द्वा खुमापि नंदुवद् निपयिसी द्व बी श्राह थे दिन व हु थे स्या के एते गांच यो गां प्रयो का एतस्य स्ट्रस्य मध्यं दे नेव है कि नहें ने खंदोव ही नेप कि निवास कि स्वा हा एति वे राजं ए छे सविवाह ने हिन अव थे हैं द्वा में देह खा श्राधी है वे विषया नस्याद रिति वे राजं ए छे सविवाह ने हिन अव थे हैं निव तु थे स्या को रुष यहा या ने तिथा या या या नो ने वा मिद्द को मह दू ति छ है ने यो निम्ह बिव से पिते वा ही तिथा नह है राय ने ने वा मिद्द सु ते सिहा त्या मणा यो यो सिम्ह बिव से पिते वा ही स्था नह है स्था प्रते ने वा मिद्द सु ते सिहा त्या सिहा ते की सिहा है की ने ने ना ने से से विश्व है सिहा है सिह द्रीतालगायत्रीणाययोगाययोगाययोगाययोगाययं स्थान्ध्यदिनं वह नितहे नह दोव स्तिय कि विद्राय ने तस्मा द्राय ने ने तस्मा ने

स्वतीजनयंतिजातत् ब्रुव्धेहित्त् तुर्थस्याक्रीर्वता उविष्ठं दसःसंति विराजः सं ति ति सु भ से नव तुर्थस्य हार्यम् क्रीर्याः ॥ १०॥ हित प्रथा माध्या यशास्त्र। १००० हित प्रथा माध्या यशास्त्र। १००० हित प्रथा देव ता पंचम हित विश्व विद्या स्वाम स्वाम स्वाम स्वाम यथा स्वाम स्वाम यथा स्वाम स्वाम

तेतरमाद्वाय श्री निविद्द्धा ति । हा। मि ता मी मि अवस्त वर्त शाहर स्वाया में स्वाया स्वया स्वाया स्वय

द्रोद्रप्रमिद्रोमहायवाद्यध्रश्नीस्त्रं सम्बाद्धं प्रवपद्रप्रं यमेहिन प्रमुख्या हिन्द्र समिद्धने प्रमुख्ये प्रमुख्ये

निर्तिवेश्वदेवस्थासवस्य हर्षयेव मेहनि पंत्र मस्याक्ताक पंहिच्यानमत् रंस्विद्दिश्यानिमार तस्य प्रतिपदिन स्था निर्देश कि विद्देश कि व

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

यसद्वितिन्य स्वित्रास्तामार वर्तमा मिहंदा स्वेदा प्राची वर्तना प्रधान महर्वह तिन्य स्वित्रास्तामार वर्तमा मिहंदा स्वेदायशाद वर्तम नेन यथास्तामय यासामयथा छंदसंरा भा तियु ४एवं वदयह समाना दक्ष न त्य छस्या हार प्रथा वत्य तियमहस्तर त्यु न प्रथा व्यवस्त्र वहा यह समाना दक्ष न त्य छस्या हार प्रथा वत्य स्व वद्य हिस् वय स्व वद्य हिस्य हिस् वय स्व वद्य हिस वय स्व वद्य हिस् वय स्व वद्य हिस वय

ष्णितिष्णमा हो हर्षचयहं इस्य सामादं द नेदीय ए दिति व दे नं हे ल्या स्विति ने ने ने विष्णि में सुन् के सुन के सुन् के सुन के सुन

तमितिताक्ष्या स्वतः ॥१२॥ पंद्रया स्वयनः पराचन्द्र तिस्त्रक्षण र छेपम निर्देश सम्पद्देष छह निष्ठ स्वाक्ष्म क्ष्या क्ष्य स्वाक्ष्म स्वाक्ष स्वाक्

व्यासम् ताहरा नवं ना सम्भा भिवस बहु निष्ण स्या हा के पनिद्र मिला रोहं रात्र स्वा स्या नह हिए पास में का हित के प्रव स्था के प्रव नह हिए पास में का हित के प्रव है वे प्रव है निस्त के प्रव स्था के प्रव

विश्व नित्य विश्व प्रमान्य प्रमान प्रमान क्षेत्र क्षे

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

त्राम्य स्वाद्यस्य स्वत्र स्वत्य स्व

सत्तमस्याङ्ग्रह्णात्येनवस्य कि तंस्त्रमहिन सत्तमस्याङ्ग्राह्यं व विस्त हो न बेवाद शियतेवस्त हो येतेवद्य देतस्य समस्याङ्ग्राह्यं व विद्यान्त देवत्य संत्राच्येत्वस्य मेवतस्य नहप्य तिसंत्र स्याह्य स्थाद्य नविद्यानी स्थाप्य वेद्याच्येत्वस्य स्थाप्य त्तामक्र श्री स्वास्त्र प्रवर्शायसः तर्तिमथ्यमेनाक्रासम् । स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र नामवयस्त्र स्वास्त्र स्वास

नहेगाने यद्रथं तर तहाकां यह इन्तदेव ते न यह ह्य छ भव नि व ह ते व तह ह स्त्यू भी भाग स्वास्त्र का या प्राप्त का या प्राप्त का या स्थान स्थान स्थान ह ह देव के न छ या व ति पा स्थान स

CC-0. In Public Domain. Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

येना नामना न्याना ना समहत्यह मा गांसा रूपंत्रां नाम नाम हे य सि निश्वाद निर्मान नह द समहत्य स्वाना र प्रमान हिंद समहत्व प्रमान हिंद सम् सि निर्मान हिंद सम् सि निर्मान हिंद सम् सि निर्मान हिंद समहत्व प्रमान हिंद समहत्व स्वान हिंद समा निर्मान हिंद समा निर्

त्रर ने तु मो निला प्रविधा । तय द्विर खंतर च छं भाव स्व छ मे द्विय द्वा स्व निधा या या स्व स्व मिद्द स्व में में स्व में स्व

षिवस्यइतिष्ठ गेष्ठ्यवित्सस्यक्षेतिकः विदे त्रवन्तः महिनेनवमस्याद्वारः प्रतिद्वेषे ग्रीक्ष्ट्रप्रातः सन्न्षिय्यक्षेत्रं प्रमिष्ट् यसमहत्र यहं रस्यसानाहर नहीयणि हित्तः ती त्रवाहर्गास्यति र्यानितात्मामक्ष्वेति प्रिन्तस्य पानितः स्वीत्राहर्ण्यव्य यस्य सा प्रक्रित्त तृष्ति स्वाद्याक्ष्य राज्ञान् वसम्भ दने वस्य विद्याने वस्य राज्ञात्मपदः । प्रवाह त्रित्त तृष्ति स्वाह प्रकाह नवस्य हित्य ने वस्य काराप्ति हिल्ले । वस्य वस्य प्राहित्य क्षित्र स्वाह वस्य प्रकाय स्वाह स्वाह त्रित्त सम्मात् विद्वा प्रवाह । वस्य वस्य प्राहित्य वस्य विद्या द्वा स्वाह स्व

स्थितित्वस्त्रमं हृश्ना निसंज वामिश्राश्च तृ स्थे तो विद्रितमं तो नवममें हृनि नवमस्या क्रोक पातृ ज्ञागतं ज्ञ गत्यो वाटनस्य च्यमध्य हिन विदेष हिन विद्रास्त्र हिविद्रीयने तस्मा क्षण ते विदेष धाति मिश्रु न निस्त कानिशास्य ते बेलु सानि वृज्ञा गतानि न जिन्न विदेष धाति मिश्रु न निस्त कानिशास्य ते बेलु सानि वृज्ञा गतानि न जिन्न विदेष धाति मिश्रु न निस्त कानिशास्य स्था प्रवास कर्मा न प्रताम वर्ष होने स्था न स्था न स्था प्रशास कर्मा न स्था न स्था न स्था न स्था न स्था न स्था क्षण कर्मा न स्था का स्था वर्ष कर्मा कर्म कर्मा वर्ष कर्मा का स्था का स्था

वमहिनन्वमस्याक्रीह्णसिंदद्वेददानुनस्निनार्तानियन्नन्याभविनिरासादानि संनतद्वितितन्तव महिन्नवमस्याक्रोह्णस्य वश्वदेशाः पश्चनेरास्य वितिहि पदाः ग्रांसिविद्वपद्वेपश्चनुष्यादाः प्रति पत्त वश्वदेशाः पश्चने भवत् देशत् सिद्याः ग्रांसितियन् मान् सवत् दिष्ठित्वे स्वत्य स्वास्य क्षेत्रस्य स्वास्य प्रतियान्त्रं रात्त्रस्य एद्तिवेश्वदेविवन्त्रवमे हिन्निस्य स्वास्य क्षेत्रस्य स्वास्य स्वास्य स्वत्य स्वास्य क्षेत्रस्य स्वास्य स्वास् श्वियाववा हिकातिहर ववर क्षित्र सम्मान ततः सपिति तमा जीयते त पत्नी जाला स्थि प्रधीन तेषां यह तामा हिनि विद्यासम्बर्धा सम्बर्धा सिनि स्वाह्या है स्व

नधिसिह्धतिरङ्ख्डित्रानेवाद्धाहादादितिस्वदि हिस्सिहाहासिक्वे नहां हो से स्मान हिंद मधिति यहा के बजा में बे क्षेत्र मयती है छिति है क्षेष्ट ति है। महास्वजातेन नहानं रायजमानेश्वर धान्य नेना कि तिर यंत रखां वा कि तिहर्ष है। बाना वा पति भाषा न यह ह इथानर देवा नो मे वन कि था ने नि था ने मवर धाने देवा नामिथन निम्थनं वडा यंतेषता सम्भायनेष अथाप छ नियण्वं व द र तमः स विश्वितामाडीयोत्ते त अगम्बाश्चित्तं व प्रायत्व व व प्रायत्व सामा जाति व द्यारित

प्रदेशियधयोगनस्यत्यः सर्वाणि हशाणिपितरे नेवर्णजाविदानिनानारः तथेयं असे तामयने ययव वेह मनमाधसोगिमनसा प्राथितमनसा अहिता विद्याना में यह वेह मनमाधसोगिमनसा प्राथितमनसा अहित विद्याना में यह विद्यान स्थान स्

भूमनं वाचिमने से समस्वत्तस्मात्मिवः संवत्तरस्यप्यति व्यहेत्वरीसमन्वार्भित्वसम्वत्द्वस्यान् व समस्वत्तस्मात्मिवः संवत्तरस्यप्यति व्यहेत्वरीसम्बद्धाः हिन्द्रवेत्वावि स्मिने क स्वाहित्यायप्रशिक्षाने न स्वावि स्मिने र न स्वाहिष्ठा र न स्वाहिष्ठा स्वाहिष हेलिखुविहिष्युम्णस्तदाहाबस्यक्षप्रमोहातस्त्राक्षति र व्यथ्यीः प्रतिगृणायवापते वसितदशस्य देष्वेत्र प्रविद्धान्ति स्वार्थात्र । वस्य विद्यान्त मग्नीदासीका । प्राणाहित्य सीमा आर्थीन बाहि ग्रमीका अस्य विद्यान मग्नीदासीका । प्राणाहित्य सीमा वासामाध्य प्रेगासी । वस्य विद्यान मन् प्रविद्यान स्वार्था । वस्य विद्यान सामाध्य प्रजापने सामाध्य प्रचान सामाध्य प्रजापने सामाध्य प्रचान सामाध्य सामा

र्षमं स्वापित स्वापित

वाष्ट्रशिवीष्टा वासितं साथ ज्ञान विद्या स्थान ये। इबिडान प्रतापति संस्थित विमान हा आसि हा येथ हो बो हो बा हा ने प्रतास है। अति हित्त से स्थान स प्रवेदरा है । शास्त्रामित हो सामान हो स गोवायनमारुप्ताब्धिहर्तिता छ्लाव्य हरस्या ह्या दिना छुल ज्ञान न वधार। रहायहत्पक्षित्र निर्माध्यायहरू एतयहरूपायहरूपायहरूपायहरूपायहरूपायहरूपायहरूपायहरूपायहरूपायहरूपायहरूपायहरूप य अपने । परक्षी यास्यो नाष्ट्रा स्न एण यस्या सातंत्र श्रायश्चिति से स्याणिन

शिष्टस्मान गढुयां यस तो मायस्याय समित्र स्वादिया साहियां महिया महिया है। थीं । हातेन सहरातेवश्वक्षक्षेत्र स्वात्व ए विश्यहोत्यविद्यानितिहोत्रज्ञाति। अधिज्ञात्रात्याक्षात्याद्याय्वाप्यविद्या यथ रावधारा विश्व समाने देशां जाप ना श्रेणपो हिना परि संयोग है है जिस स्वानित CC-0 In Public Domain Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection णान्यतिसर्वे गेरं पेरिष्वि नेमल्या नार प्राप्त प्राप्त है से प्रदेश के ने प्रदेश के कि प्रदेश के कि प्रदेश ने प्रदेश ने प्रदेश ने प्रदेश ने प्रदेश के प्रदेश ने प्रदेश के प्रदे

त्राहत्रस्थ्यविदितुरोतियथान यनश्चित्रणायाद्भित्रमधानं सम्भुनितगाहत्रत्र देवानियहणाथागायति। इद्दर्धतरा पामिदमेनियुक्तं पद्दत्न नेवेष्य द्वापिसवीन याभिया देवीनाथा यथी ग्रेहिबेनान्यवद्गु द्वाप्त केम्प्यदिनिरार्थन्य श्वाप्यद्वापि नेमिनवेर्थयत् रमात्रावृद्धते हेने ह्वाप्त र्वाप्त स्वाप्ताया यानाय था स्वाप्त विविद्वानु दितं कुरुनित्तासाद् पिनदेन व्याप्त देवानि यसगा थाना येने प्राप्त था स्वाप्त रिणोबेन या यादि हे बांन्यद्वपया जना वाद्यव्य यित्ते बहुनोत्ताना सः प्रश्ने ह्वाप्त द्वाप्त के व्याप्त हित्र बांन्यद्वपया जना वाद्यव्य यित्र बहुने ह्वाप्त स्वाप्त हित्र वेद्य स्वाप्त स्वापत स

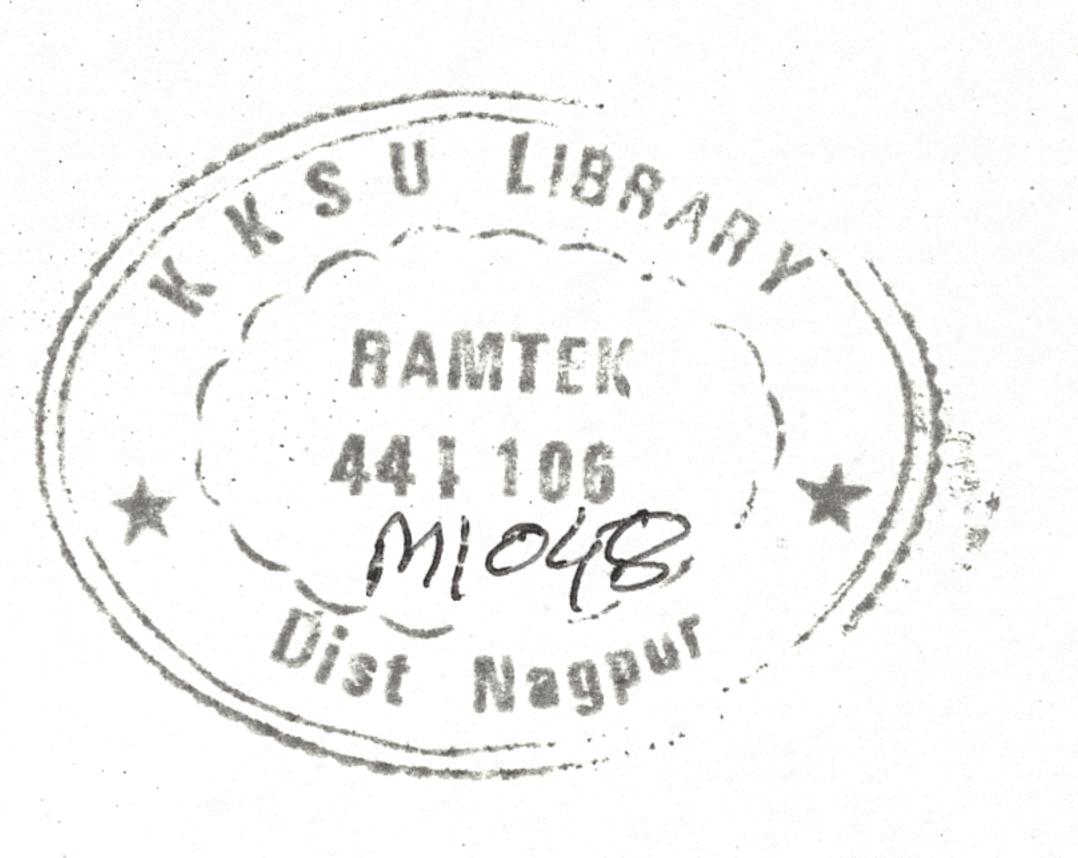
हियालमप्तिहोत्राथमना निहात्रं जुलितितमेषा देवतापर हा परण द्यासा बेलीक र उक्षा बो सा स्थायालमणिक हे जायमना णिक हे जं सु हो तितस्ता द्यालमणित हो जा यस्या ज्ञु द्वातस्ता दा इतिसायमति छार पर ध्या दस्त वस्त विद्वान्त गरी जा न खुते यं उदित हो भिने मे का दशा खंगातु तै तब्ध पुर्वा वस्त या प्रमित्र हो ति स्था है दिवहान्ता जुले त्यविद्वान्त्रे तितस्या हे का दशा खंगा है जिसे ते त्या है जिया है वास्त्र स्थाय प्रजान वित्य प्रविद्वान्त्र दिन हो कि ति स्था हि ते हो ते व्या प्रधा है वित्र हो ति यथ इस्तु स्व त्या स्थाय वा स्वा त्या स्व ते प्रति है ध्या ता हक्त दश्य य उदि ते जुले ति यथ इसा स्था वा वसा य वा स्वा ता स्व ते प्रति हथ्या ता हक्त दश्य य उदि ते जुले ति यथ इसा स्था व सा य वा स्वा ता स्व ते प्रति हथ्या ता हक्त त्र स्था स्व हिंदी य सा स्व विद्या ता हक्त त्र स्था स्व हिंदी य स्था ते दिन हिंदी हिंदी हिंदी है कि स्था हो हिंदी हिंदी है कि स्था हो हिंदी है कि स्था है हिंदी है कि स्था है कि स्था है कि स्था है कि स्था है हिंदी है कि स्था है हिंदी है कि स्था है हिंदी है कि स्था है क निज्ञ होतियथा प्रस्तायबाह क्तिनेवाध्ययंत हक्त आद्धाना हक्त दयय्वदित ज्ञहो । भयथा खरुषा यंवाह किन्याय विद्याने हक्त आद्धाना हक्त प्रमाण क्रिया विद्या किन्या प्रयोग हक्त प्रमाण क्रिया क्रया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिय क्रिया क्रिय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रय

त्र्यान्यामितिसवणेतयतस्व पत्र स्वमाञ्चाकात्र तृष्ट्यामित्र रहे दवता त्राक्षात्र पत्र पत्र पत्र प्राप्ति क्षेत्र प्राप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वर्णे प्राप्त स्वाप्त स्वा नेथिविद्यापेश्वकतेनव जलम्बु बंकोरवा ज्ञब्र स्वापित्यं दिनोयत्तनक अधा त्रीयाद्धार यत्तरणया प्रितानत्तपद्धाव स्वातासव त्यापद्धातायाय दिन्नितिरित्तिया तापित्य वर्षा वर्षा प्रदेश स्वाप्ति क्षेत्र क्षा क्षित्र क्षेत्र क्षेत्र

MANAGORIA SERVICIANTER OF THE STATE OF THE S RECIES OF THE PROPERTY OF THE RETURNED TO THE THE PARTIE OF IKKERISTERIKETERIKERINGERIKE स्रोहिं अंतिरसाद्यादेश सम्बन्धा स्रोही वित्र क्षित्र स्रामा देवले हैं है। स्रोदेश हो हो एवं वह सामा द्वीलेंद्र ना हो क्षेत्र के वह स्रोहिंग्ड हैं। दिसामित स्वारिया विभिन्न विभाग विभाग

तिसवित्यस्य स्थास्य विषय एउद्यास्य स्थात्य स्यात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्यात्य स्थात्य स्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य स्थात्य असिस्ताधामध्यामध्यासारातस्य सिम्हास्य अस्ताधामध्यामध्य

था । वंतस्ता असिनिधवश्रीमा द्योदित दावने ह्यादिन्द्रवत्ति आह दिचारित यसवने द्यादिर विस्ति है बिहरारिया खारात्रवाज्याहरुवस्ताज्ञासितसयदाहेर्यनतस्ता क्लेन्डावयहर्डियहर्मिस्यदेवतासंद्रमेवतड्डीथंकरोतिद्रान्या भाष्य १ माहिडवेनश्यत्राधिमेरावेनां स्तदाहतहाह॥ १॥ १॥ भइतिवेचम स्रोतं क्रिया विद्यायने नाध्ये सार्य से नेप हो नेवनम्बर्धायनऽहास्त्रियंपिकार्



,CREATED=23.10.20 10:12 TRANSFERRED=2020/10/23 at 10:16:59 ,PAGES=27 ,TYPE=STD ,NAME=S0004448 Book Name=M-1048-ETREY BRAHAMAN ,ORDER\_TEXT= ,[PAGELIST] ,FILE1=0000001.TIF ,FILE2=00000002.TIF ,FILE3=0000003.TIF ,FILE4=0000004.TIF ,FILE5=0000005.TIF ,FILE6=0000006.TIF ,FILE7=0000007.TIF ,FILE8=0000008.TIF ,FILE9=0000009.TIF ,FILE10=0000010.TIF ,FILE11=0000011.TIF ,FILE12=0000012.TIF ,FILE13=0000013.TIF ,FILE14=0000014.TIF ,FILE15=0000015.TIF ,FILE16=0000016.TIF FILE17=0000017.TIF ,FILE18=0000018.TIF ,FILE19=0000019.TIF

[OrderDescription]

FILE20=00000020.TIF
,FILE21=00000021.TIF
,FILE22=00000022.TIF
,FILE23=00000023.TIF
,FILE24=00000024.TIF
,FILE25=00000025.TIF
,FILE26=00000025.TIF
,FILE27=00000027.TIF